11827
11827

ॐश्रीरामाय नमः।

श्रीराम प्रेम पियूष लतिका

रचयिता—

श्री पं० रामप्रिया शरण जी
उपनाम–पण्डित दिलीप जी।

प्रकाशक—

महात्मा चतुर्वेदी
ब्रम्हाघाट काशी।

प्रथमोल्लाश।

प्रथमबार ५०० सन् १९३६ मूल्य प्रेम

शुद्धाशुद्धि-पत्र

सूचना—कृपया इस 'शुद्धाशुद्धि पत्र' के अनुसार पहिले संशोधन करके तब ग्रन्थावलोकन कीजिए।

भूमिका—

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	८	प्रमोद्गार	प्रेमोद्गार
१	६	चतुष्ट्य	चतुष्टय
२	४	सस्करण	संस्करण
२	१३	जुह्णोषियत्	जुहोषियत्
२	१४	तपस्यासि	तपस्यसि

श्रीराम प्रेम पियूष लतिका।

पृष्ठाङ्क	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	७	कभ	कभी
६	२	पनि	पुनि
१८	४	रदीजै	रहीजै
२७	११	श्रति	श्रुति
३३	२	सिहासन	सिंहासन
३४	१२	आँखिया	अँखिया
३४	१६	सिराने	सिराते
३५	१०	कचुकी	कंचुकी
३६	२	वैजन्तिक	वैजन्ती
४३	४	जो	वो
४३	१६	जा	जो
४४	६	प	पै
४५	८	किपनोई	कितनोई
४६	६	वोना	होना

❀ ॐ तत्सत् ❀
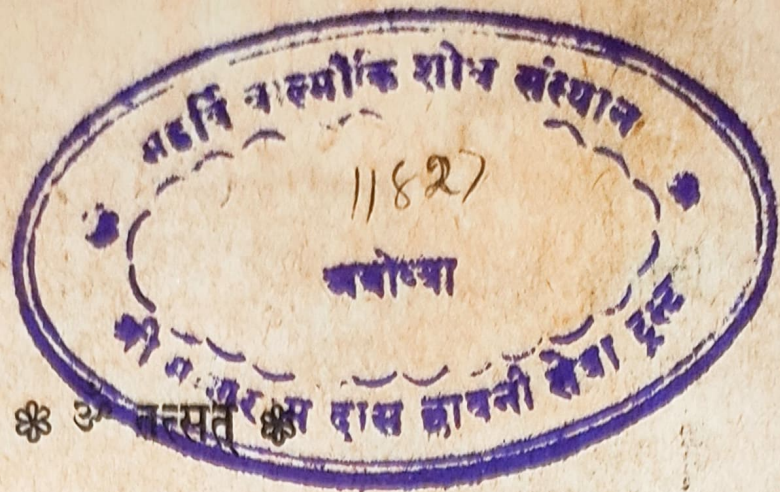
भूमिका।

निखिल ब्रह्माण्डनायक परमात्मा की अपार कृपा से चिर-काल चिन्तित सर्व भक्तशिरोमणि काशी निवासी वैष्णवाग्रगणी महात्मा पं० श्री १०८ दिलीप व्यासजी की रची हुई श्री राम प्रेम पियूषलतिका नाम पुस्तिका तैयार हुई है। जिसमें कवि ने बिचित्र पदों के निर्माण द्वारा भक्तों का श्रीरामचन्द्र में सेव्य-सेवक भावक हार्दिक प्रमोद्गार रूप दिखला कर अन्त में अन-न्यता की सिद्धि व्यक्त की है। श्लोक चतुष्टय द्वारा सगुण ब्रह्म विषयक मङ्गला चरण ५वें श्लोक से पाठ जनित फल स्तुति तथा अपूर्व पद, कवित, सवैया सरस पदों की रचना से सहृदय भक्त-जनों का नितान्त उपकार किया है और पदों के अन्त में 'राम-प्रिया शरण' कहकर निज नाम की प्रसिद्धि द्योतित की है। इसके निरन्तर मनन पूर्वक अध्ययन से त्रिबिध दुःख निवृति भी सम्भावित है। शान्ति कलक आत्मप्रसाद होने से मोक्ष तो सुतराम् सिद्ध है। यद्यपि भाषा में अनेक छन्द ग्रन्थ कविकृत उपलब्ध होते हैं। तथापि इसकी अपूर्वता भगवत साक्षात्कारकारिणी

विचित्र सरस पद पूर्विका विलक्षण होने से सर्वभक्तजनों के लिए उपादेय है। पुरुष प्रमाद द्वारा या शिलाक्षर से यदि छपने में त्रुटि हुई हो तो सज्जन बृन्द क्षमा करेंगे। और समुचित-त्रुटि सूचित कर देंगे। जो द्वितीय सस्करण में सुधार दी जावेगी। परमदयालु भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र जी स्वयं निज भक्तों को अनन्यता पूर्वक शरण में आने की आज्ञा देते हैं—

सर्वधर्मान् परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहंत्वा सर्वपापेभ्योमोक्ष यिष्यामिमाशुचः ॥ अ० १० श्लोक३६

सम्पूर्ण धर्मों को छोड़कर एक मेरी शरण में आजाओ। मैं तुमको सब पापों से मुक्त करूँगा। किसी प्रकार का सोच मत करो।

अन्त में भगवान की इस आज्ञानुसार—

यत्करोषियदश्नासियद्ददासि जुहोषियत्।
यत्तपस्यासि कौन्तेयतत्कुरुष्वमदर्पणम् ॥

इसे हम जनतारूपी जनार्दन के कर कमलों में सादर समर्पित करते हैं। आशा है कि भक्तजन अवश्य अपना कर निज मनोऽभिलषित मङ्गलसाधन करेंगे।

मन्त्री विद्वत्परिषत्
काशी।

निवेदक—
श्री रामावधि शास्त्री

राम प्रेम पीयूष लतिका

❀ मङ्गलाचरणम् ❀

स्वबिमलविभुवृत्तैर्बोधयन्यः सुकृत्यम्, सकल मुनिगणानां तोषदानायलोके। अतिशय बहुपुण्यै रागतो ब्रह्मरूपो जयतुजयतु रामः सीतया शोभमानः ॥ १ ॥

सरलार्थः—जो जगतमें बसिष्ठादि सकल मुनिगणों को सन्तोषादि आह्लादि देने के लिये दुष्ट जनवधादि स्वच्छ व्यापक वृत्तियों से उत्तमोत्तम कार्यों को जनाते हुये पूर्वसञ्चित धर्मादिकों के अधिकता से राजादशरथ के गृह में पुत्रत्वेन उतपन्न ब्रह्म स्वरूप वह रामचन्द्र जानकी के साथ शोभायमान बारम्बार विजय को प्राप्त करैं।

श्रीरामे मतिराप्यतां जनकजापादोदकं सेव्यताम्। जाह्नव्यादि सरिद्वरां किमपिनोऽपेक्षामहेऽभिष्टदाम्। प्राग्जन्मार्जित कर्मणां फलमिदम्

देवायतस्मैकदादास्ये स्वच्छधियाहमीश निकटे सेवाञ्चसम्प्राप्नुयाम् ॥ २ ॥

और हे, श्रीरामजी ! आप में मेरी मती कब प्रवृत्त होयगी और श्रीसीताजी के चर्ण कमल का धोवनजल की जिसमें सरयूजी विराजमान है उसको हम कब सेवन करैंगे और श्रीगंगा आदि जितनी नदी हैं कामना को पूर्ण करनेवाली उनसे कोई कामना को न कहकर संकोच रहित कब होउँगा ? और हे श्रीराम ! आपको यह जो मेरे अनेक जन्मो का संचित कर्म्म रूप फल है इसको कब अर्पण करूँगा और मैं निर्मल बुद्धि से आपके सामीप्य सेवा का अधिकारी कब होऊँगा ॥ २ ॥

सीताराम पदे यथा तनु भृतां येवैमनुष्या- पराः सद्भावं परिकल्पयन्ति सुधियः स्नेहंविनालौ- किकम् । धन्यास्ते कथयन्त्यहो मुनिगणाः किम्बापरैर्जन्मभिर्यच्छ्रीरामपदाम्बुजार्पितधिया मा- नन्द वृन्दं सदा ॥ ३ ॥

और हे श्रीसीतारामजी ! आपके चर्ण कमल को सुन्दर बुद्धि से लौकिक कामनाओं सेरहित होकर तनुधारियों में मनुष्य होकर परायण होते हुये श्रेष्ठ भावों करके युक्त अर्थात् स्वामि सखा पितु मातु गुरु इत्यादिकों से सहित जिनको महात्मा लोग भी प्रशंसा

करते हैं ऐसे आप सदा आनन्द समूह को इस बुद्धि को भी अर्पण कर एक ही जन्म में इस दान रूप पद को कब प्राप्त होंगे ॥३॥

दासोऽहंसुधियां पराम्प्रतिदिनं सेवाञ्च सम्प्राप्नुयाम् सद्वर्णैमतिराप्यतां ममवचः कर्णैर्यशः श्रूयताम् । पुण्यारण्यमयी च भूमिरपरा वासायनो गृह्यताम् रूपाणाम्प्रति लोकने किमधिकं तद्रूपमा-लोक्यताम् ॥ ४ ॥

और हे श्रीरामजी आपके जो दास हैं श्रेष्ठ बुद्धि वाले उन महात्माओं के सेवा में मैं कभी प्राप्त होऊँगा और आपका सतवर्ण जो श्रीराम नाम है इस नाम रटन में हमारी मति और वाणी आपके यश श्रवण में हमारे यह कर्ण कभी प्राप्त होंगे—और आपका निवास जो पुण्यारण्य आनन्दवन है इसको त्याग कर और भूमि में वास करने की इच्छा मेरी कभी न होगी—और आपके रूप का दर्शन कर फिर अन्य रूपों को देखने की अभिलाषा कभी न होयगी ॥ ४ ॥

यत्पादाम्बुज सक्तसान्द्ररजसा संक्षालिताः राजसम् पापौघस्यचिरस्यचित्तगतं श्रद्धाहृतामा नवाः। दूरी कृत्य विनोदपूर्णममलं लोकम्परम्प्राप्नुयुः सेयंराममयी मनोहरमयी सृष्टिः कदास्यान्मम ॥५॥

हे श्रीरामजी ! जिस मनुष्य ने श्रद्धा करके आपके चर्ण कमल के रस को आदर पूर्वक ध्यान किया उनके रजोगुण के सर्व विकार बह गये और पाप समूह बहुत काल के संचित चित्त के नष्ट होगये ऐसी जो यह आपकी मनोहर राममई मूर्ति इसकी जो सृष्टि उसमें उसके होते हुये कब बसेंगे अर्थात् उसके कब कहावैंगे ॥ ५ ॥

यःश्लोक पञ्चकमिदन्मनुजः प्रभाते रामाभिमन्त्रितधियः स्मरणंरोति । तस्यासुसिद्ध्यति मनोऽभिहितञ्चकार्यं रामप्रिया शरण कृद्भगवत्प्रसादात् ॥ ६ ॥

हे श्रीरामजी जो मनुष्य इस पाँच श्लोक को आपके नाम रूप लीला और धाम करके अभिमंत्रित बुद्धि से पढ़ेंगे स्मरण करेंगे उनके जितने मनोर्थ हैं सो सब राम प्रिया श्रीसीताजी के कृपा से बहुत जल्दी पूर्ण हो जायँगे ॥ ६ ॥

❀ पद ❀

पद रज श्री गुरु की अति पावनि । भक्ति भक्त भगवन्त कृपा की जनु जननी आपुहि प्रगटावनि ॥ सदा स्वतन्त्र सुवास सुरुचि हिय अति

अनुराग सुबास बढ़ावनि। जनमन मुकुर हरनि मलसुन्दरी रामसरूप अनुप लखावनि। अमिय मूरि चूरन करिहितसों सेवत भवरुज मूल नसा-वनि। सुमिरत जिन्हहिं वार एको पल भरि भरि नैन सुनेम अँजावनि। गुप्त प्रगट लख परहिं चरित सब दिव्य देव के मन अतिभावनि। दलनमोह दारिद दुकालगति सुकृत सींवते हियविच आवनि। रामप्रिया जन भाग भवन की आछै दृष्टि सुयोग करावनि।

❀ कवित्त ❀

गगन गणेश औ गजानन कहायो पुनिमोद औ प्रमोद लिये दोऊ करठाढ्यो है॥ ऋद्धि नव अष्ट सिद्धि सेवा में रहत नित जाकी कृपा कोरकी कटाच्छ अति गाढ्यो है। दया को निधान मुदमंगल करन हेतु नाम को उचार सब देवन ते बाढ्यो है। राम प्रिया जनके पितु मातु गुरु सखा आय ब्रह्म पै पयोधि मथि रूप निज काढ्यो है॥

कवित्त

काटत भव फाँसी पनि डाँटत यमगणखासी नासीहै जु बरुणा सङ्ग भावी नास काशी है। लालति गिरिजासी पालक शम्भु सो उदासी जहाँ ज्ञान की प्रकासी कहे पाप सब नासी है। प्रगटी जो रमासी अविनासी है छमासी भुवि सुने करुणासी धाय गोद में निवासी है। रामप्रिया प्रेम को बाढ़ाइबे में कौन ऐसी जैसी कविताई तुलसी दास की कृपासी है॥

पद

बिघन विनासन मूरति हेरो। नाम परायण होहु सबेरो॥ जय गजबदन षड़ानन भ्राता एक दन्त लंबोदर टेरो॥ सिद्धिसदन भयहरन विनायक सुमिरत कृपा करहि इक बेरो। रामप्रिया जनहृदय माहि जेहि रामलषन सिय करहिं बसेरो॥ २॥

पद

जै जै जै गिरिजा महरानी कृपा करहु शिसु

सेवक जानी ॥ जै महेश अर्धङ्गनि वासिनि–भक्त हृदय तम सदा बिनासिनी । जै स्वतन्त्र छबि सुधा पियासिनि सती मौर पियभोग विलासिनी । जै काशी बसुनाम जपावनि राम प्रिया हिय सुख उप जावनि ॥ ४ ॥

❀ पद ❀

कसन उमाबर दीन दसा की सुरति हमारि दया करि हेरो ॥ जलज नयन गुण अयन मयन रिपु निजजन जानि दियोमोहि डेरो । सेवक स्वामि सखा सिय पी के करुणाकर कीरति बहुतेरो ॥ बिन तव कृपा रामपद पङ्कज सपनेहुँ भक्तिन प्रेम घनेरो । रामप्रिया जन द्वार पर्‌यो है जाउँ कहाँ तजि चरन अनेरो ॥

❀ पद ❀

हमरे तौहित देव दिवाकर ॥ प्रणतारति भंजन जन रंजन दोष दुरित रुज हरत जपत नर। विधि हरिहर मूरति तव स्वामी महिमा अमित

प्रभाव प्रभाधर ॥ जैनिज वंश कमल कुल पोषक
शोषक भवनिधि जो अति दुस्तर। रामप्रिया जन
जन्म जन्म तें भटकत आनि पर्यो द्वारे पर ॥

❀ सवैया ❀

खोटो खरो रघुनायक जू जन तेरो कहाय
कहाँ अब जैये। पातक पीन कुदारिद दीन रहौं
तनखीन कहाँ लगिगैये॥ भेष बनाय गनावत हौ
अरु जाति सुजाति कुजातिहि खैये। कबहूँ नहिं
रावरे दासन को हित हेरदया करि अंजुलिदैये ॥

❀ सवैया ❀

बित्त हरौं पर दोष धरौं अजहूँ कतहूँ विश्राम
न पैये। गाय बजाय रिझाय सबै भरि पेट यहै
सब सिद्धि कमैये। नाम की ओट कहौं सबसों
कलिहैं न कछु तप तीरथ धैये। रामप्रिया
शरणागत की बिगरी लखि धाय विलम्ब न लैये।

❀ पद ❀

पवन तनय हमरी सुन लीजै। कहिहौं और कौन

सो जाके तुम बिन को अपनो येहि कीजै ॥ सब विधि हीन पतित पावँरजन औगुण सुनि केहि कै पति रीझै। है जग में स्वामी पद जिनको उलटा नाम न को सुनि रीझै। जाको चरित श्रवण सुनते ही प्रेमवारि मानस तन भीजैं। करुणा कर सुन्दर सब लायक रहते पाप नहीं क्यों छीजै ॥ ऐसे दुसह दरिद्र दोषते मोको कबहुँक पार करीजै। रामप्रिया जन मन बस मेरे नाम रटन चितवन रस पीजै ॥

❀ पद ❀

सखि अब मोहिं न कोउ समझावै ॥ सुख हित करत उपाय निरंतर अनइच्छित दुख पावै। श्रवण सुयश मुखनाम रूप को सिरहि प्रणाम करावै। भावभेद रस भेद मिलन की बहुविधि वेद बतावै। यहि अवसर साधुन की चर्चा पोथिन ही में पावै ॥ वह मारग कोउ औरइ सजनी पूरा पकरि सिखावै। कहिबेते कछु घाटि न होइहै

क्यों करि लोग हँसावैं। कहे बिना रहिबोहु बनत नहिं रहि रहि जिय अकुलावै। दिन अरु रैन जात नहि बनिहैं मानुष तनहिं गँवावै। रामप्रिया प्रीतम प्यारे बिन आहैं भरनाभावैं ॥

❀ पद ❀

सियावर कबहुँक सुरति करै ॥ बिन देखे कल नाहिं परत है नैननि नीर ढरै। जी चाहत देखत नित रहिबो तनिकौ नाहि टरै ॥ लोक वेद मर्याद यही है इनको जबहिं बरै। रामप्रिया प्रीतम प्यारे को केहि विधि सों पकरै ॥

❀ सवैया ❀

बिन देखे लला मुरझाय गई ये तिहारी पियारी कृपा करता। इनको अब सींचि दया जलते जलते को बचैयो तुम्हीं भरता। जेहिते न मलीन रहैं कबहूँ ये सनेहलता अति कोमलता। टुक बैठो यहाँ विश्राम करो निरखो तो जरा यह प्रेम लता।

❀ सवैया ❀

अति आतप में चलिबो न भलो, चलिबो तो चलो तजि चंचलता। जेहि देखन आस पियास खरी मिथिलापुर की सगरी बनिता। तुम श्यामल टुक गौर किशोर भले, भली राम प्रिया की मनोहरता। बैठो यहाँ विश्राम करो निरखोतो जरायहां प्रेमलता।

❀ सवैया ❀

अब काहे को मानत हानि हिये गणिका गज गोध क्रिया चितचोरी। बिगरी बहु जन्म समात नहीं कतहूँ भइ चूक गलानि कियोरी। शरणागत मानस रामप्रिया करि प्राण निछावर प्रेमबयोरी। ठाकुर हैं अवधेश लला ठकुराइन श्री मिथिलेश किशोरी।

❀ सवैया ❀

नहिं चित्त सों ध्यायो सियावर को, तेहि ते यह आपद आए परोरी नित्त नवै नवनेह बढ़ै तो कहा चलिहैं तिनकी बरजोरी। राम प्रिया

जब नाते लगाते तो खातों न कुकर कौर घरोरी। ठाकुर हैं अवधेशलला ठकुराइन श्रीमिथिलेश किशोरी ॥

❀ कवित्त ❀

जरि जाउ सम्पति सदन सुख नेहवा को मातुपितु भ्रातु सुत मित्र अरु नारी को। करुणा के निधान मेरो राम लखन सीताजू के मिलने में सहस भाँति करेना सह्मारी को। जिनके बसत आज रामनगर ऐसो लागै जाके ना रहेते लोग करते तयारी को। देख लेहु लोकरीत आँखनते भली भाँत कै तो है मिलाप भरत के तो देह जारी को ॥

❀ पद ❀

कछु कहिबे की अभिलाष रही। दीनबन्धु रघुपति किंकर ह्वै देखब अवध मही ॥ प्रणतपाल प्रण तोर मोर प्रण करिहौं कबहिं सही। चरण कमल करुणानिधान के जिवत जीवगही ॥

सुतवित नार भवन ममताते मो मति विकल डही। मणि बिन हीन फणी सिर पटकत पुनि पुनि फिरत मही॥ जाको जौन सुभाव पर्यो है उपजत अङ्ग वही। ऐसो जानि शरण तकि आयो पद रज आसठही॥ हौं जड़ जीव ईश रघुनन्दन ना तौ बिधिहिं दई। रामप्रिया जन फुरहि बचन तव जब छबि चितहिं छई॥

❀ पद ❀

खल तोहिं भल मग कौन बतायो॥ मात पिता भ्राता सुत बनिता पुरजन परिजन जहँ तू जायो। कहि कहि कथा पुरातन साँची माया बस स्वरूप बिसरायो॥ मैं हूँ कौन कहाँ कित रहिबो एकौनहिं समझन में आयो। आइ अचानक काल करम के फन्दे फँसि २ जन्म गँवायो॥ देखत हो आई बिरधाई जो तैं सपनेहुँ नाहिं बुलायो। जोगबियोग रोग बस व्याकुल कतहूँ मन विश्राम न पायो॥ रामप्रिया जन अजहुँ सुमिर तूँ कोशलेश

दशरथ के जायो। कोटि मनोज लजावन हारे जेहि महेश मन रहत लोभायो ॥

❀ सवैया ❀

झाँकी लखो अति बाँकी सखी फिर धौं किन आवनो होय कि नाहीं। राम सनेही को धाम जहाँ चलिहौं संग लागि तहाँ पहुँचाहीं। पाँव पखारि बताय सुमारग कण्टक भाल बराह बचाहीं। रामप्रिया बसिवो सँग सुन्दर जो बिधिना पुरवै मनसाहीं।

❀ कवित्त ❀

दानिन को दानी महरानी है जो रानिनि की सानी है महेशरंग वेदहूँ बखानी है। ज्ञानि हूँ की ज्ञानी गुण खानी सुखदानी सवै सेवत पदकञ्ज शची शारदा भुलानी है। रामप्रिया जानी जनता की लाजबानी अहै पूरन रहत सब ठाऊँमें समानी है। मानहूँ में मानी सनमानी ऐसी करै कौन जैसी आज देखी अन्नपूर्णा भवानी है।

❀ पद ❀

तुम बिन और नाहिंन ठौर ॥ प्रणत पाल दयाल दूजौ सुन्यौ नाहिंन और । जाचकन को होत आदर आएते येहि पौर ॥ आज लौं नहिं सुनी कहुँ अपनाएवो जन दौर । चूक जन की आप मानत करत हिय विच गौर ॥ कौन ऐसो हित अकारन करत दीनन दौर । कुसमयेहू में मान राखत दानि के सिर मौर । द्वार द्वार ललात माँगत टूक कूकर कौर । तेउशरण अब रामप्रिय के देत चन्दनखौर ॥

❀ सवैया ❀

जे जन मानस मानस को करिदिव्य कथा सुनिहै चितलाई । कहिहै गुनिहै जोहि रूप अनूप अनूप सुभाव सुभाखनताई । होइ सचेत सप्रेम करै तिन में वहलाल लली दरसाई ॥ रामप्रियाजन की अरजी मरजी कब होइ दया अधिकाई ॥

* पद *

कबहुँ तो राम २ रट लैहों ॥ निशिवासर रुचि पाप अशुचिमन हरि पद बिमुख जनमि दुख पैहों। पाँचो ज्ञान जनक इन्द्रिन को राख भरोस बहुरि पछतैहो ॥ माया जीव काल कर्ता की मूरति जब लगि हियन बसैहो । तब लगि जनम अनेक यतन करि कबहुँ न सिय पिय के मन भैहो ॥ कुण्डल मकर मुकुट सिर भ्राजे आनन की छबि जबहिं चितैहों । अनायास मिटि जाय दुसह दुख तबहींते अनमोल बिकैहों ॥ रामप्रिया जन नाम परायण ह्वै कर कबहिं चरण शिर नैहों । ढरनि आपनी ख्याल करहिंगे तब पुनि फिर कर कर न बिकैहों ॥

* पद *

भजन न एकौ बनत सही । कठिन कुसंग कुपंथ चलावत फिरि फिरि बाँह गही ॥ एकहौं दीन मलीन हीन मति विपति की बीजवई ॥

द्वार द्वार कूकर सूकर सो डोलत उमिरि गई। ना जानो केहि सुकृत किये को फलतुव नाम लई ॥ ताकी ओट पेट भरि औरन कछु नहिं हाथ दई। भवमग अगम अनन्त सिरावै सुनि जिय माहिं रही। एकौ बार नाथ करुणाकर दरसन देन चही ॥ श्रवण कथा मुखनाम हृदय वह मूरति छटा छही। रामप्रिया जनहौं बड़ भागी पैरत थाह लही ॥

❀ कवित्त ❀

जाकी कृपा कोर को निरेखतहि नाहीं रहै दीनता कराल कलिकालता भभरि जाय। मैलो मन बनसो दवारि के बुझाइबे को कामद घन जनके मनोरथ सुभरि जाय ॥ भालहु के कुलिपि निवारिवे को दावा गीर भीर भवसागर की पीरता कबरि जाय। राम प्रिया पायन की भायन सो नेह करूँ मंगलविनोद मोद गोद में झहरिजाय ॥

* सवैया *

हे अवधेश लला तुम पै मैं पुकारि कहौं हमरी

सुन लीजै। यापुर में नहि कोऊ रहै बिन तोहिं दयाकरि दृष्टितो दीजै। ए पशुकीर सचेतन जीव अधीर ह्वै आँसुनते तन भीजै। राम प्रिया केहि भाँति रहै जब प्राण चलै तब देह रदीजै॥

❀ कवित्त ❀

लगै जौ मिठाई गिरा कहे कि रचिक राम रसना रसिक कान अन्त हूँ सुधरिगो। भरिगो पियूष हद उमँगो सुरति आँच मिलिबो चहत सुख सिन्धु को उछरिगो। जरिगो सनेह लोक लाज कुल कानि सबै जनता भयेते काम आदि सब मरिगो। तरिगो अनन्त कुल डरिगो कठिन काल राम प्रिया पायनकी धूरिते सम्हरिगो।

❀ कवित्त ❀

मैं तो सुनी बात यह गुरु जन लोग माँहि दीन दुःख टारिबेको बान धनु धारी हैं। और अवतार हैं अनेक काज करिबे को रघुकुल मणि राम तामे अवतारी हैं। करुणा कर तब तो जाइ

दीनन के भवन माँहि आपद अनेक हूंते कैसे कैसे टारी हैं। दशरथ के नन्द सिया लोचन चकोर चन्द राम प्रियाजन के अनन्द अतिकारी हैं।

* हिंडोरा *

प्रीतम प्रीत हिंडोरा झूलैं, श्रीसरजू के कुलै पीत बसन भूषन महि राजै प्रीत द्रुमन के फूलै पीन घटा घन चमक पीत है पीत फुहारै खूलै। पीत भवन प्रीतम प्यारे की महँकत पीत दुकूलै। रामप्रिया पीय रमक झुलावति कहि बतियाँ सूख मूलै॥

* हिंडोरा *

आजु बन्यो अति सुघर हिंडोरा चलो जू झूलो ना, प्यारे जू । अति बिचित्र बन भूमि सुहावनि बिधि मन भूलो ना। चतुर सखी निज करन बनाई सिय अनुकूलो ना । पावस खग गण गिरा सुरन को साज अतूलो ना। रामप्रिया रस बाग बैनते सुमन सुफूलोना।

❋ दादरा ❋

अब तोसों बिलग होके ना रहबै। प्राण प्राण के जीवन जी के भरिकै उमरिया गुजर करबै। लोक वेद मरजाद शृंखला तोरि तिहारी शरण गहबै। नख शिखलौं अङ्ग अङ्ग माधुरी रूप सुधाते नैन भरिबै। राम प्रिया प्रीतम प्यारी पैं तन मन धन अब सब बरबै॥

* दादरा *

बिन देखे सजन अब का करबै। घर घर टूक भूख के कारन भेख धरे भव किमि तरबै। जपतप नेम प्रेम की बातें कर कर जिय कब तक भरबै। अस मोहिं सूझ परत सुनु सजनी खाय जहर उनपै मरबै। राम प्रिया अवधेश छयल की सुरति लहरिया मैं परि जरबै।

* होरी *

होरी आय गई अब प्यारे की पकरौंगी फेट। मनमानी कर कसक मिटाऊँ जौ वासों भइभेंट। कुण्डल लोल कपोल गुलाबी देखौंगी

भर पेट। राम प्रिया गुरुजन मरजादा चलि आज सब मेट।

❀ रेखता ❀

हमारे प्राण के प्यारे दृगन में आ समा जा रे॥ कुँवर अवधेश के दोऊ न तुम सम और है कोऊ। जिगर को दर्द के दारू जरा आकर बता जारे॥ नजर भर देखलो हमको मिलैं या ना मिलै तुमको। तयारी हो चुकी हमरी बिदा की गर लगा जारे॥ छैल तुम बिन तड़पता जी न निकले प्राण ये पाजी। नहीं है आस मिलने की कृपाकर आ मिला जारे॥ जुल्फ़ जुल्मी फँसाने की जनों के मन बसाने की। प्रिया तेरी अहै श्रीराम नामों से लखा जारे॥

❀ रेखता ❀

वह चन्द्र मुख प्यारे हमें कबहूँ दिखावोगे। दृग दोउ मेरे चकोर ज्यों आशिक करावोगे॥ कानों को गुन गन गान के अपने सुनावोगे।

मृग मीन रसना यों किये चारा चखावोगे ॥ मधुकर मतंगहि प्रेमते नासा सुँघावोगे। अंग संग कराकर मोको अब बैरी बनावोगे ॥ पासा परा है अबकी जी जीदाँ लगावोगे। ये राम प्रिया प्यारी तेरी हारी जितावोगे ॥

❁ दादरा ❁

बिनु तेरे सजन नहिं कोउ हमरे। प्रेम वारि सों पालित बिरवा बिनु सींचे किमि रहत हरे। अन्तर पीर धीर नहिं धारै रहि२ असुवन दृगन भरे ॥ निरखि २ मुख लाल तिहारे कबहुँ२ मन मोद भरे। रामप्रिया अवसर के चूके फिर का करिहौ देखि खरे ॥

❁ ठुमरी ❁

जदुवा डारि दिनो रे, मोपै भरि नैना के कोर। चली जात मग बीच छयलवा, फोरि दई बिनु काज घयलवा, गारी देई बिनु लाज चदरिया फारि दीनो रे। इत उत चितै कहत कछु वैना, कहा कहुँ वाकी छबि मैना, अलबेली कजरारी

चितहिं चोराई लिनो रे ॥ अजब बनी घुँघरारो अलकैं, केसर खौर मनोहर झलकैं, श्रुति कुण्डल मुख वारि मनोजहिं लाज लजीलो रे। फिर २ नाम लेइ मोहिं टेरत, जिय की जरनि हरनि हँसि हेरत, रामप्रिया के नाते सुख उपजाइ चीन्हो रे ॥

❋ कजरी ❋

आजु मन हरि लीनो वह लाल तनक तिरछी चितवनिया कै। घायल फिरौ दिवानी सी मग दृग रतनारे पै ॥ अनियारे कजरारे पैने नैननि वेध्यो है। हिय कसकै जिय विकल हाय यह कैसे छेद्यो धैं ॥ धुनि धुनि सीस दरस बिनु बैठी चित्त पाहन दै। रामप्रिया अलि अलक फाँस दै चलिगो मो मन लै ॥

❋ होरी डफ ❋

मन भर ले यार अब होली में। गाय बजाय रिझाय सबन को मान हरो मिठ बोली में। बसो करनु जनु मन्त्र जगायो द्वार हो द्वार ठठोली

में ॥ श्री स्वामिन सँदेस हौं लाई भरि गुलाल चलो झोली में। रामप्रिया फागुन के रसिया क्या बसिहौ कोउ खोली में ॥

❀ पद ❀

शरण सिय लाल के होते तो क्यों परबस पड़े रोते। जनम ऐसो वृथा खोते करम बोझा न यों ढोते। सफा कर बीज अस बोते उन्हीं के गोद में सोते। न हर दम खाते गम गोते न रहते बैल से जोते ॥ नेम कर कर सों जो ओते युगल पद कञ्ज को धोते। तरन तारन भई छोते गये कित पाप के पोते ॥ पढ़ाये बाल के तोते भये श्रीरामप्रिय मोते। अज्ञानी अन्ध ज्यों टोते मुझे कर पार इस भोते ॥

❀ पद शिवजी का ❀

बिनती सुनो सदा शिव मोर नैया अरुझी पार लगावो। अति पवन करत झकझोर मनो दधि उठत करार हलोर साज सब बिगरि गयो है मोर

बिनती कापै करौं बतावो। हौ तुम दीन जनन के नाथ चन्द्रमा को धारे हौ माथ तुम बिन कौन सुनैगो गाथ दया वह अपने को दरशावो॥ जगत यश मौर विराजति गंग गौरी धारी है अरधंग। निशिदिन राम रटन को रंग बिना तोहिं और कहाँ ठहरावो॥ दुइ आखर नाम तिहारे कलिमाहिं जे सदा उचारें। गले अक्षमाल द्विज धारे हो जेन राम प्रिया कहवावो॥

अयोध्या

❋ पद ❋

कबहुँ न राम मिलन की चाह। हा हा करत दिवस निशि दौरत भव मग अगम अथाह। सूझ न परत सुझाव न कोऊ युगल मिलन की राह। सुख उतरात दुख ही में डूबत होत मरन अरु ब्याह। देह गेह धन चिन्तन ही में भूलि गयो सिय नाह। करै जो कर्म पाव फल सोई टारे टरै न काह॥ अस बिचारि जे भजत राम के मिटी सकल उर दाह॥ वृथा सकल सुख सपना ही

को दिन २ परम उछाह। राम प्रिया जन रामहिं सुमिरत होत चोर ते साह ॥

❀ पद ❀

बिसरि जनि जैहौ हमे प्यारे हो। कीन विदेह बिदा सुनि सबके नैनन सों बहै जलधारे। प्रिय प्यारी साली सरहज की प्रीति लगा किमि फिर टारे ॥ तुमरी गति को कहै पियारे हिय सबके जाननि हारे। राम प्रिया गर भेंटु बिदा की चलनो अहै अब भिनुसारे ॥

❀ पद ❀

बिनती हमरी सुनिये श्री अञ्जना दुलारे। यह दीनता दवारि को बुझावै बिन तिहारे ॥ जै पवन पूत रामदूत त्रिभुवन उँजियारे ॥ सिया मातुजी पिया के दुःख द्वन्द हूँ सो तारे। जै अङ्गदादि जाति जो कपीश को उधारे। मरते समुद्र तीर सिया सुध बिना बिचारे ॥ महिमा

तुम्हारी को कहै सियाराम को उचारे। बस राम प्रिया कीन्हो है कुल को कलङ्क टारे॥

❀ ग़ज़ल पद ❀

क्या बनी झाँकी अनोखी आज सीताराम की। मुनि पटधारी अनूप शोभा कोटि काम की॥ धनुष बान जटाजूट हाथ शीश चित्रकूट। मन्दाकिनि मज्जन करि देत अभय दान की॥ कुसुमन ते सहितपता लता आल बाल की। कुटी है विशाल सुघर अपर लखनलाल की॥ छाया वट बेदिका बनाई तट सरिन मध्य तापै नित सुनत कथा श्रति पुरान की। मुनि गण शुक पिक समाज सोहत ऋतुराज साज रामप्रिया रामचरित कहि बखान की॥

❀ कजली पद ❀

सजनी राम लखन बिनु देखे पल भर नाहिं परै जिया चैन। पीत चौतनी सिरन सोहाई सुन्दरताके ऐन॥ मुख सरोज मकरन्द मधुप सो

पान करत जनु मैन। कानन कनक फूल छबि हलकनि कुण्डल कच बिथरैन ॥ रामप्रिया बाँको वह झाँकी लगे नैन सो नैन ॥

❀ कवित्त ❀

श्री गुरू हैं हमारे स्वामी जानकी शरण दिव्य राम प्रिया ध्यान सहस कञ्ज दल वासी को। छेत्र है अयोध्या धनु कोटि तीर्थ धाम मेरो रामनाथ सुख विलास चित्रकूट खासी को ॥ इष्ट श्रीजानकी उपास्य रघुनाथ जू हैं वेद ऋग नाम हरि मन्त्र सुखरासी को। अक्षर षडक्षर जो तारक कहायो जग योग है वशिष्ट ऋषि कौशिक सुपासी को ॥

❀ कवित्त ❀

देवता हमारे हनूमान श्री वैष्णव हूँ शिखा स्वर्ग नगरी गोत्र अच्युत प्रकाशी को। शाखा है अनन्त वसन शुक्ल कौपीन युग वार हैं, है अंगुल प्रमाण पाप नासी को। मेखला है तीन तार मूँज

को मुकटि माँझ अंचला सुहाथ द्वै सुहाई श्वेत वासी को। पाँच हाथ सात तार कन्था श्वेत वस्त्र चार चौड़ी है अढ़ाई हाथ आसन जिनासी को॥

❀ कवित्त ❀

संग रामोपासक को गुण है सतोगुण जेहि भिक्षा है मनोज्ञ शुभ सात्विक सुपात्र की। पात्र है अलाम्बु जेहि मुद्रा सप्त शीतल है उर्ध्व पुण्ड द्वादशांग शोभित सुगात्र को। शङ्ख तुलसी माल है अगस्त्य संहिता के तन्त्र राम तत्त्व गोप्य भक्ति सेवा है सुछात्र की रामप्रिया दीन चरण सिंचन से सेवित ह्वै राह नहिं झाँको क्रूर कुटिल कुपात्र की॥

❀ कवित्त ❀

येही तीन तीस भेद जान्यो जिन जान्यो सोई जान्यो के सोई जाय बिनु कृपा रघुनाथ को। नाथ हैं दयाल यह जीव रघुनाम याको

कबहूँ समुझ निज ओर गति पाथ को॥ नीच ही चलत तू तौ नीच नहिं मानत है देख तूँ बिचार अब चलै तेरे साथ को। रामप्रिया शरण ह्वैके काय वाक मानस तें आपनी कमाई दैके गाउ गुन गाथ को॥

❀ कवित्त ❀

दादा मेरे दशरथ औ दादी श्री कौशिला आदि मैया मेरो मैथिली बबैया रघुरइया हैं। नाना हैं जनक नानी बाँकी हैं सुनैना रानी मामा मेरे लक्ष्मी निधि मामी सिद्धि दैया हैं। भुवा मेरी शान्ता फुफेरे ऋषि शृङ्गी जू चाचा हैं लखन भरत शत्रु के दबैया हैं। चाची मासी दोऊ हैं सुनैना लली राम प्रिया जन के रखैया मेरे हनुमत भैया हैं॥

❀ गजल ❀

हमारे प्राण प्यारे को जो कोई चलते बचाते। तो क्यों मारग अगम को आज जाते॥ विधाता

से हमारी अर्ज जा करके सुनाते। इन्हें देते हमें तो अपने आँखों में बसाते ॥ क्योंकर कुँवर बन बन में चल कर मूल फल को खाते। छरस भोजन अनेकों भाँत कर्ता क्यों बनाते ॥ जटा सिर पै मुनि को वेष कर जंगल सिधाते। पिता माता कहो किस भाँति से वो दिन बिताते ॥ लखन सीता चरन कोमल इन्हें क्यों कर चलाते। प्रिया श्रीराम तेरी है बचा हरदम बला ते ॥

❀ पद ❀

हमारी स्वामिनी हमको कभी तो याद करती हैं। पड़ा हूँ आन भवसागर लखो कब तक पकड़ती हैं ॥ हजूरी आप सब जनको हमारी पायलागन हो। कृपाकर हम गरीबों के खबर की आसदायन हो ॥ अगम दरिया में फंका हूँ कसूरी तो जरूरी हों। बिना इसके कलङ्की लोग कहते हैं सबूरी हों ॥ वह दया भर २ के आँखों से जभी हमको निहारोगी। तीनों ताप से बचाकर गोद

अपने ही धारोगी ॥ ये रामपिरिया जन तुम्हारा साँच कर कर कर धरो। दीजिये अवलम्ब माँ तूँ बाल तुव चरनन परो ॥

❀ पद दादरा ❀

अँवसर सों हमारी खबर लैहो। हौं तुमरी जैसी हौं तैसी तुम हमरे जीवन धन हौ ॥ प्राण-नाथ मोसम नहि कोऊ अधम अभागी कहूँ पैहो ! शोभा सींव सुभग लोचन वह चितवनियाँ ते चितै दैहो। रामप्रिया अवधेश लला मोहिं छाँड़ि अवध कैसे जैहौं ॥

* कवित्त *

बलिहारी है मोद लता तुमरी कपटी जन तारन को सुघटी हौ। जाचत ब्रह्म अनेकन देव मिलैं नहिं सो मिथिला प्रगटी हौ ॥ जेहि माँह विराज रहे रघुनन्द मनोहर चंद अनन्द छटी हौ। रामप्रिया जनके मनको सुखदायक ज्यों वह गंग तटी हौ ॥

❀ चर्चरी ❀

जयति जय जनकजा सीन सिहासना दीन जन ररततुव नाम पेखो। हरहु भ्रम मोर मति दुष्ट अति सुष्ट करि कृपा की कोर अजहूँ निरेखो॥ पतित एक आय तब द्वार पर टिक रह्यो पर्‌यो नहिं रहन पावत सरेखो। कबहुँ कामादि भट विकट खट पट करत लरत बरजोर मा बिकल देखो॥ दोष को कोष मो सम न कहूँ और कोउ पोखतेहि आइहौ नीति ज्ञाता। पाहि मा सकल सौभाग्य ज्ञानप्रदे नमत पद कंज कोविद बिधाता॥ अखिल ब्रह्मांड की नायकाधीश्वरी तर्कनातीत दुष्प्राप्य पाता। परम करुणार्द्र चित्तानुकूलेजने भुवनभर्तैकविश्रामदाता॥ भरत सौमित्र रिपुदवन सेवित चरन मर्कटाधीश जे विमल त्यागी। गहे कर छत्र चामर धनुष व्यजन असि बाँण ढ्वतूण कटि चर्म लागी॥ बहु जन्म जेहि यतन करि त्यागि छल राखि हरि धारणा ध्यान न खसिखनुरागी। ते ब-

सत सामीप्य सेवावलोकन चखन नारदादिकन की भाग जागी ॥ सनकादि मुनिसिद्ध योगीश आनंद लहै निरखि ब्रह्मादि शिव धन्य मानै। करहि गुन गान निज लोक महँ जनन प्रतिवाक् पुलकावली प्रेम ठानै ॥ अँजना सुवन दुख दोष दारिद दमन दाहिनी ओर उच्चरत तानै। बजत सुर वाद्य गंधर्व नाचत नटी दिव्य देवाङ्गना चतुर जानै॥ मंगला आदि सुख शयन सेवा ललित आठहूयाम की आठरानी। करत हिय भरत सुख उमग कोकहि सकै राम प्रिय जानकी जान जानी ॥

❀ ठुमरी ❀

पिया की सुरत आँखिया भरि आई री।

कुंडल लोल कपोलहिराजे गजमुक्तन की माल विराजै भाल तिलक घुघुरारी अलकैं नैना गजब मोहि मारि गिराई री। कोटि मनोज मौज मदमाते शोभा रसना कहि ना सिराने भृगुटी कुटिल नासिका लटकनि लटकि रही अखियन

बिच छाई री ॥ सिय मुख राम राम मुख प्यारी चितवन भरि आँखें बलिहारी देह दशा गई भूल अनवसर चितहि चोराई री । चारु सिंहासन सहज सुहायो जनु मनोज निज हाथ बनायो, तेहि पर राजत राम प्रिया अलि गावत धाई री ॥

❀ होरी ❀

आज मिल्यो मग जात लँगर मोहिं गारी दई बिनु लाज करूँ क्या । औचक आय मलत मुख मेरो बाँह पकर बिनु काज लरूँ क्या ॥ छोरतबन्द कचुकी फोरत गागरिया अब जाय भरूँ क्या । राम प्रिया अबलाजन कैसे निबहैगी ब्रत तास धरूँ क्या ॥

❀ पद ❀

झटपट चलो आज पनि घट पै नागर नटहि दिखाओ रे । धेनु चरावन मिस इत आवे, करि संकेत नाम गोहरावे, ग्वालबाल धँवरी कारी पियरी लै आवोरे ॥ अधरसुधारस पान करावै, धारे युगल करन मन भावै, मुरली मधुर मनोहर स्वर-

ते ताहि गवाबो रे । मोर मुकुट सिर माहि धरावै, मकराकृत कुंडल मोहिं भावै, गल वैजन्ती कमाल लाल हिय माँहिं बसावो रे ॥ वाके गुन गन अतुल अमोलैं, जो जानै सो रहै अबोलैं, राम प्रिया शृङ्गार रूप धरि वृज महि छावो रे ॥

❀ होली पीलू ❀

कैसी तू झलक दिखाइ बे रातो नींद न आई ॥ मकराकृत कुण्डल श्रुति झलकै गले विच्चों माल सुहाइबे । कुंचित कच सिर मुकुट भाल तेरे तिलक रेख सानू भाइवे ॥ कोटि मनोज लजावण वाल्या शोभा कहि न सिराइबे । हाय रब्बा अब कैसी कराँ मेरे दिलाँदी खबर सुनाइवे ॥ रामप्रिया तेरी साँवली सूरत लग्गी लाज कपाट बहाइवे ॥

❀ पद होली ❀

कैसी तू शबद सुनाइवे आज ढबदो रब्बा मैंनू । चित चंचल वरजो नहिं मानै चाहत उन तक जाईवे ॥ हाय दई मैंताँ कैसी कराँ अब को

जानै पीर पराइवे ॥ घर विच्चों काज साज सब अटपट कैसे तूँ दें न्दा दिखाइवे ॥ रसिया छैल अलवेलो छटाको सींव खरो मगआइवे ॥ राम-प्रिया मैंता बल२ जावाँ जिन मेरो खबर जनाइवे ॥

❀ होरी काफी ❀

होरी आय गई अब प्यारे की पकरूँगी फेंट। मन मानी कर कसक मिटाऊँ जो वा सो भई भेंट॥ कुण्डल लोल कपोल गुलाबी देखोंगी भर पेट। रामप्रिया गुरुजन मरजादा चली आज सब मेट॥

❀ दूसरी सहाना ❀

चलो आज खेलैं लला संग होरी। मलि गुलाल मुख वोरी खवाऊँ पकरि पिया को बनाऊँ नई गोरी॥ दूलह श्याम किशोर लड़ैती दुलहिन तड़ित वरन तन कोरी। करैंगी कहा कोउ कहैंगे कहा अब नैनन को फल आज लहोरी॥ रामप्रिया छबि निरखत रहियौं धर्म कर्म यहि पाखै बोरी।

❁ काफी ❁

होरीलाल सों मेरी आँखों में लागैगी चोट।
देखन में मुखचन्द लला हो परै न जामे ओट॥
पीर पराई जान बूझ के ऐसी करो क्यों खोट।
रामप्रिया रंग सम्हरि चलाओ परै न जामे मोट॥

❁ होली डफ की ❁

मैं तो खेलूँगी फाग अब फागुन में। आज कसक मनकी निकसैगी तनक सुने डफ वाधुन में॥ ॥मैं तो०॥ ऐसो दिन सपनो फिर ह्वै हैं मनमानी करलाऊँ उनमें। रामप्रिया रंगी लाज चदरिया फारि दई मेरि याजुन में॥ मैं तो०॥

मन भरले यार अब होली में। गाय बजाय रिझाय सबन को मान हरयो मिठ बोली में॥मन०॥ वसीकरन जनु मंत्र जगाया द्वारहि द्वार ठठोलो में। श्री स्वामिनी संदेस हौं लाई भरि गुलाल चलो झोली में॥मन०॥ रामप्रिया फागुन के रसिया क्या वसिहो काउ खोली में॥ मन०॥

❀ बसंत ❀

चले देखन सीताराम धाम ॥ जहाँ बसत सदासुखरासि राम । निर्मल मन जन सरयू सुबारि, मज्जन बिधिवत् त्रै ताप हारि ॥ जेहि तीर तीर अनुराग बाग, वसीकरत विविध जप योग याग । वैखानस बटु योगीश मौन, गहि करत ध्यान शिव धरत जौन ॥ सुन्दर सरुप छबि काम लाज, निरखो पल एकहु तजि कुसाज । कर कमल गहे धनुबान लाल, मुखचन्द सुहावन खौर भाल ॥ पट पीत दुकूलहि तड़ित रंग, नखसिख लखि कैसहु गति अभंग । फल पाई जनम को जीवन चारु, पुनि बनै कि ना अवसर गँवारु ॥ परु रामप्रिया पद पदुम आजु । बिगरो बन जैहैं सब समाजु ॥

❀ कवित्त ❀

करुणानिध होते वह करुणा विसारी कहाँ मोसे दीन दूवरे को ठाकुर ठहरुना । मैं तो जैसो तैसो अब तेरोइ कहावत हौं रावरी कृपातें चल्यो

काल को लहरुना ॥ दुखद नहीं है सुखदानि बानि जाकी चित्त चढ़िकै वसावै किमि मेरे शुभ घरुना। रामप्रिया दीन की दयाल बिन बूझै कौन अबतो रही है थोड़ी देखिके हहरुना ॥

❀ पद ❀

अब तो मानो न मानो तुमरे होई चुके ॥ होनहार मिटिवो कठिन चाहै जैसी होय अजहि मशक को करि सकै सुनी दुनी में टोय अब तो चरनों में मेरो शिर आई झुके॥ सबकर हित कर ते सदा हित अनहित नहि कोय तौ भी प्यारे मीत की मान करत सबकोय। फिरते फिरतेहि द्वारे आई रुके ॥ बिनु जाने सो प्रीत करि मरते हैं सबकोय, जरहि पतंगा मोह बस तन डारे खोय अबतो भव से डरे तोरे आई लुके ॥ तेरी सौं साँची कहौं राखो शरण समोय, रामप्रिया जन रावरो होनी हो सो होय। अब तो विरह अनल महि आई फुके ॥

❀ रेखता ❀

अरजी हमारी सुनिये सिय पिय की दोहाई। गहि बाँह मेरी लीजै भव डूबते बचाई ॥१॥ करुणा भरी वो आँखें अधमो को जो समाई उनमें नहिं कोऊ हौं किधौं वेद झूठ गाई ॥ २ ॥ अपने को आप धाके जो देखते पैंहाई कहते बनै न वाको आपनेहि पै लखाई ॥ ३ ॥ वानक बनाके ऐसो कबहूँ तो दे देखाई जन रामप्रिया चरण शरण पावत बनिजाई ॥ ४ ॥

❀ पद बटोहिया की चाल ❀

मेरी ऐसी दीनता विलोकि कै दया की दृष्टि कबहूँ करोगी येहि ओर सिय स्वामिनी। जाऊँ केहि द्वार अब आइके तिहारे ढिग करुणानिधान वान काको सिय स्वामिनी ॥ आजुलौं करति आई करती करौगी पुनि महिमा अपार नहि जान्यो सिय० ॥ मेरे दोष कोष को धरोगी चित्त आप ने जो कतहूँ ठहर मेरो नाही सिय० ॥ सुनते

रहे हैं अपनाइबो न ऐसी कहूँ समझ परी है कछु आज सिय० ॥ माया मोह डूबते बचायो जो त्रिबेणी माँझ राम यश नौका गहवैया सिय०॥ औरहूँ अनेक बार कृपा ही भई अधार मेरे नहिं और कोउ चाव सिय०॥ झूठ जो कहूँ तो गरि जाउ जीह जरि जाउ साच जो कहूँ तो पाऊँ पान सिय०॥ आपकी जो सखियाँ सहेली अलबेली अहै इनको निदेश कर दीजै सिय० ॥ रामप्रिया दीन जन जान कै सम्हार कीजे मेरो यह कहो मातु मेरी सिय स्वामिनी ॥ ८ ॥

❀ पद पूर्वी चाल का ❀

हमरे राघव जू कै पगिया केशरिया सोहै ना । मुक्तामणि की माल जर कसी सुमना पोहै ना ॥ कल कपोल कुण्डल हलकन मिस युगजन जोहै ना॥ भौंहै कमान तान सयनन सों मनवाँ मोहै ना । रामप्रिया छबि वाँकी दृगन की अब करु छोहै ना ॥

❀ पद ध्यान ❀

बैठे युगल मनोहर दोऊ ॥ रतन जटित सिंहासन राजै उपमा कवि कहि सकत न कोऊ । जो उनमें उनमें वो बिहरैं घनदामिन जनु सोऊ ॥ नील पीतपट गहनन की छबि अंग अंग सखिन सँजोऊ । कोटिन कामदेव रति लाजैं सुन्दरता निज खोऊ ॥ २ ॥ क्रीट मुकुट कुण्डल इत सोहैं उत सिर चन्द्रकला गहि पोऊ । धनुष बाण इत कमल करन में भक्तन के दुख द्वंदन सोऊ ॥ ३ ॥ जो अज ब्रह्म अनादि अगोचर चरित करत नरतन धरि गोऊ ॥ रामप्रिया जनमन या मूरति हिय नयन बिच राख समोऊ ॥ ४ ॥

❀ पद ❀

आजुसों हमारे पितुमातु सियराम हैं ॥ जा बिनु लहि विधि सम नर देही जीवत जीव निकाम हैं । जा निज जन को भाव परम लखि पालत आठो जाम हैं ॥ १ ॥ करुणा कर कृपाल कोमल

चित सकल गुणन को धाम हैं। प्रण तारति भंजन जन रंजन शोभा कोटिक काम है ॥ २ ॥ विधि निषेध जहँ एको नाहीं पाँच वर्ष लों ठाम है। परमानंद देत सुख छिन छिन जपत जपावत नाम है ॥ ३ ॥ महामोह सरिता अपार को पार करत गुन ग्राम है। रामप्रिया जनु दीन जनन प्रिय लगत जाड को घाम है ॥ ४ ॥

❀ पद दादरा भैरवा ❀

पनि घटवाँ पं मेरी चुनर भटकी। दशरथ छैल गैल बिच अटक्यो वा दिन से मैं रहूँ भटकी ॥ कहा कहूँ वाकी छवि आली वह फहरान पीत पटकी। मृदु मुसकानि बङ्क अवलोकनि बतरावनि सरयू तट की ॥ रामप्रिया प्रीतम प्यारे पै गोइयाँ हमारी सुरति अटकी ॥ १ ॥

❀ रागमुलतानी ❀

अरे छैला छबीली छटा पै मैं वारों धन-धाम। अलक घुँघुरारी बिथुर रही कारी लगै अति

प्यारी न भावै कोइ काम ॥ ऐसो जिया चाहै मरूँ येहि आहै परूँ पग नाहै जू आठोजाम। देखो मेरे कँगना में बाल बिहँगना अब आवो मेरे अँगना में सुन्दर श्याम ॥ ये रामप्रिया चेरी शरण अब तेरी करौ जनि देरी बिकी बिनु दाम ॥

❀ सहाना कजली दादरा ❀

टरो ना हमारे नजर ते सँवरिया ॥ चाहैं कोउ कियनोई कहै कछु बिछुरे न पल कल परते सँवरिया। भजतन को भजते सब कोऊ हम अबला अनभजते सँवरिया॥ कैसी करूँ मग काँटे घिरे येहि डर लागै पग धरते सँवरिया। रामप्रिया बिन तेरे और को मेरे मैं आसकेहि करते सँवरिया॥

❀ बधाई ❀

बाग महल बिच सिय पगु धारी आज अनंद बधाई माई॥ राज कुँवर दोउ सहज सलोने तिनकी है पहुनाई। को जानै केहि सुकृत सयानी विधि संयोग बनाई ॥ इहऊ मनोहरि उहऊ मनोहर नैनन

लेहु बसाई। उनके मन उनमें अटके हैं उनके उनमें जाई ॥ याहीते बर बाग बिदेहक देहदशा बिसराई। पिय पीतम संयोग भूमि की महिमा को कहि गाई ॥ एक चकोर एक चंद परस्पर रामप्रिया मन भाई ॥

❀ पद ❀

हमार मन मोह लियो गुइया अब बगिया में कुँवर सलोना। कहा कहूँ छवि छैल अवध की ऐसी न है कहुँ वोना ॥ नख शिख लो अंग अंग माधुरी तामे लिहे कर दोना। ता बिच सुमन भरे सबही के बिलगरीत बिधि ना बिरचो ना। गुर-जन लाज अनवसर सुधि करि लोचन जल भरि रह युग कोना ॥ रामप्रिया सनेह तरु अरुझे अचल रहो कबहूँ सुरझोना ॥

बर्मन प्रेस लाहौरीटोला, काशी में मुद्रित।
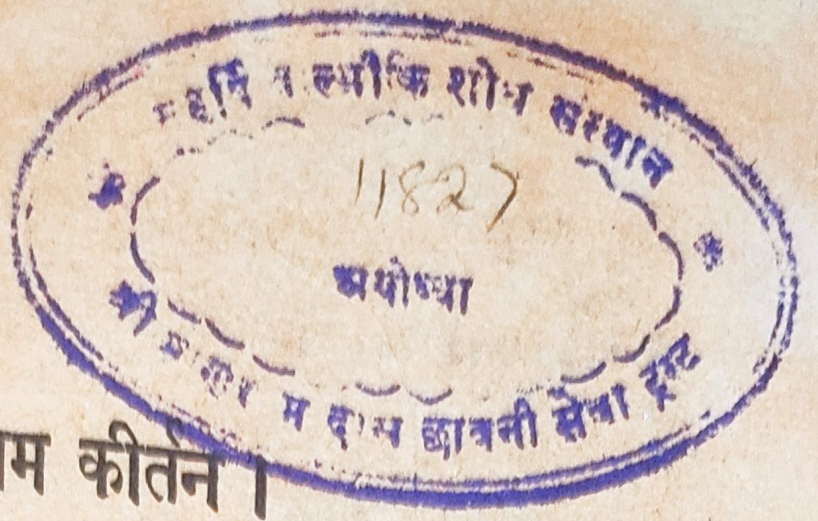
अथ नाम कीर्तन ।

१-यस्यस्मृत्या च नामोत्या तपो यज्ञ क्रियादिषु ।
न्यूनं संपूर्णतां याती सद्यो बन्दे तमच्युतम् ॥

दोहा-राम राम कहि राम कहि, राम राम कहि राम ।
तनु परिहरि रघुवर विरह, राउ गये सुरधाम ॥

२-हरे राम हरे राम, राम राम हरे हरे ।
हरे कृष्ण हरे कृष्ण, कृष्ण कृष्ण हरे हरे ॥

३-जै सियाराम जैं जैं सियाराम ।
जै सियाराम जैं जै सियाराम ॥

४-श्री कृष्ण गोबिन्द हरे मुरारे ।
हे नाथ नारायण बासुदेव ॥

५-जै सीताराम सीताराम सीताराम जै सीताराम ।

६-जै रघु पति राघव राजाराम पतित पावन सीताराम ॥

——❖——